दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कं॰ लि॰

The Oriental Insurance Co. Ltd.

दि ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड

क्षेत्रीय कार्यालय - चतुर्थ तल, इंदौर विकास प्राधिकरण, 7-रेस कोर्स रोड, इंदौर – 452002

दि ओरिएंटल इंश्योरेंस कं° लि°
राजभाषा विभाग,
क्षेत्रीय कार्यालय,
इंदौर

क्षेत्रीय कार्यालय, इंदौर
गृह पत्रिका : दिविशा
अंक : तृतीय
2024-25

संरक्षक
संजीब एड्डी
उप महा प्रबन्धक

मार्गदर्शक
तिलक राज़
क्षेत्रीय प्रबन्धक

संपादक
पम्मी शिंदे वासुरे
राजभाषा अधिकारी

सम्पादकीय पता :
दि ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
क्षेत्रीय कार्यालय - चतुर्थ तल, इंदौर विकास प्राधिकरण भवन ,
7-रेस कोर्स रोड, इंदौर – 452002

ई-मेल :
pammi.shinde@orientalinsurance.co.in

अनुक्रमणिका

- उपमहाप्रबंधक का संदेश 2
- क्षेत्रीय प्रबन्धक का संदेश....3
- संपादकीय 4
- हिंदी : एकता और सांस्कृतिक गौरव की वैश्विक आवाज़ 6-7
- वे दिन 8
- जिम्मेदारी का सफ़र 9
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति 10
- न.रा.का.स. में ओरिएण्टल इंश्योरेंस का प्रतिनिधित्व 11
- न.रा.का.स. इंदौर उपक्रम अर्धवार्षिक बैठक 12
- कविता - एक पल 15
- कविता – संतुलित जीवन....16
- अनोखी दास्ताँ 17
- ज्हान्वी गंगा 18
- प्रकृति का उपहार 19
- कहावतों की कहानियां 20
- देश की आत्मा है हिंदी 21-23
- चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेन 25-27
- कितनी विधाओं में बहता है 28
- ओरिएण्टल परिवार की उपलब्धियां 29
- काँच मंदिर 30
- सतर्कता जागरूकता सप्ताह 31
- कबीरदास के दोहे 32
- क्षेत्रीय राजभाषा सम्मलेन 33
- महिला दिवस विशेष 34
- बीमा लोकपाल 35
- वरिष्ठ लेखिका के काव्य संग्रह से 36
- बिमा ए.एस.बी.ए. 38
- नराकास द्वारा इटारसी कार्यालय को उत्कृष्टता पुरस्कार....39
- वो शब्द सुनने दो 40
- अनंत प्रश्नों का संसार 41
- विविध गतिविधियाँ 42-43

गृह पत्रिका केवल आंतरिक वितरण के लिए है । पत्रिका मे व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार है , तथा संपादक मण्डल का पत्रिका मे व्यक्त विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि हमारा क्षेत्रीय कार्यालय विगत कई वर्षों से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए प्रयासरत है। ओरिएण्टल इंश्योरेंस की गृह पत्रिका का तृतीय अंक इसका द्योतक है। पत्रिका का प्रकाशन न केवल राजभाषा हिंदी में कामकाजों को गति देता है अपितु कार्मिको में भाषा की समझ और रचनात्मकता भी विकसित करता है। चूँकि यह क्षेत्र हिंदी भाषी क्षेत्र होने के कारण यहाँ कर्मचारियों में हिंदी भाषा के प्रति अद्वितीय प्रेम है। यहाँ ऐसे कई कर्मचारी है जो अपना सम्पूर्ण काम हिंदी में ही करते है। यह प्रशंसनीय है।

हिंदी भाषा बहुत ही सरल, उपयोगी एवं निरंतर अपने आपको विस्तारित करने वाली भाषा है , यही कारण है कि हिंदी भाषा सबको मान्य है। अखिल भारत में परस्पर सौहार्द के लिए भी ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे अधिक से अधिक जनता समझती है जिसमे हिंदी भाषा खरी उतरती है।

ओरिएण्टल इंश्योरेंस कं.लि. राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में हमेशा से अग्रणी रहा है ,यह प्रमाण है कि हमारे यहाँ हिंदी भाषा का कार्य सुचारू रूप से जारी है। गृह पत्रिका का तृतीय अंक रोचक व मार्गदर्शक हो , यही मेरी कामना है।

शुभकामनाओं सहित ....

संजीब ऐड्डी
उप महा प्रबन्धक
क्षेत्रीय कार्यालय – इंदौर

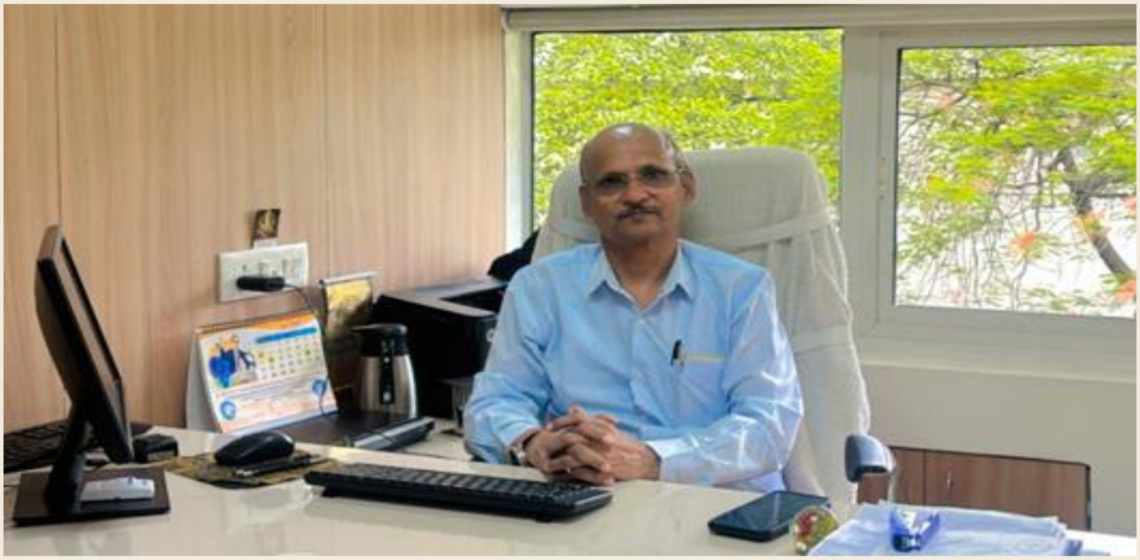

संदेश

यह बड़े ही हर्ष का विषय है कि हमारे क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका “दिविशा” का तृतीय अंक प्रकाशित किया जा रहा है। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के कार्यान्वियन में एक और नया आयाम जुड़ गया है। मध्य प्रदेश में हिंदी भाषा का ज्ञान रखने वालो की कमी नहीं है। इसकी अभिव्यक्ति समय-समय पर शब्दों के माध्यम से प्रकट होती रहती है। इस बार भी पत्रिका के माध्यम से इन विचारो को मूर्तरूप प्रदान किया गया है।

यह निरंतर प्रयास होना चाहिए कि पत्रिका रोचक और ज्ञानवर्धक हो इसलिए आवश्यक है कि प्रत्येक कर्मचारी अपने विचारो को पत्रिका के माध्यम से व्यक्त करे व सभी तक यह सन्देश भी पहुँच सके। पत्रिका का प्रकाशन कर ओरिएण्टल इन्श्योरेन्स राजभाषा निति को क्रियान्वित करने में अपनी भूमिका निभा रहा है।

मै इस पत्रिका के सभी लेखको को विद्वतापूर्ण लेख के लिए बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित ....

तिलक राज
क्षेत्रीय प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, इंदौर

........सम्पादकीय..........

सभी सुधि पाठको को मेरा सादर नमस्कार। हमारी गृह पत्रिका समस्त कर्मचारियों को अभिव्यक्ति का मंच प्रदान कर रही है। इस बार पत्रिका में केवल कर्मचारियों ही नहीं अपितु उनके परिवार के सदस्यों को भी स्थान मिला है। हमारी गृह पत्रिका का यह तृतीय अंक है अतः ये उम्मीद है कि आप सभी के सहयोग से राजभाषा विभाग इस पत्रिका का प्रकाशन नियमित रूप से करने में सक्षम होगा।

पत्रिका में प्रकाशित समस्त लेख उम्दा है। व्यक्ति जन्म से कवी या साहित्यकार नहीं होता परन्तु जब वह अपने भावों और विचारों को लिपिबद्ध करता है तो वह स्वतः ही रचनाकार की श्रेणी में आ जाता है। जो शब्द को लय में पिरोए जाते है वह कविता बन जाती है और जब कोई अपनी स्मृतियों और अनुभवों को अपनी लेखनी में व्यक्त करता तो वह कहानी हो जाती है। ये किस्से और कहानियां हमारे आस पास हमेशा विद्यमान रहते है पर यह जरुरी है कि हम उसे ज़ाहिर करे। इसलिए सभी से यह आशा है कि आप भी इस दिशा में प्रयास करेंगे और पत्रिका को और बेहतर व रोचक बनाने में मददगार होंगे।

पत्रिका के इस अंक में विभिन्न पहलुओं को शामिल करते हुए एक बहुआयामी समावेश करने का प्रयास किया गया है। आपके बहुमूल्य सुझाव पत्रिका को और आकर्षक बनाने के लिए महत्वपूर्ण है। पत्रिका के समस्त लेखकगण प्रशंसा के पात्र है। सुधि पाठको से अनुरोध है कि आप पत्रिका पढ़े व हमें अपने विचारो से अवगत कराएं ताकि आगामी अंक और संपन्न होकर आप तक पहुंचे।

सादर.............

पम्मी शिंदे वासुरे
सहायक प्रबन्धक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय – इंदौर

प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह राष्ट्रभाषा का विकास करे । हिंदी का प्रसार सागर तरह विशाल होना चाहिए जिसमे भारत भाषाएँ भी अपना सही स्थान बना सके । राष्ट्रभाषा किसी प्रान्त या समुदाय तक सिमित नहीं होती है ।

– सरदार वल्लभ भाई पटेल

भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है । हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है ।

– नरेन्द्र मोदी (प्रधान मंत्री)

भारतीय सभ्यता की अविरल धारा प्रमुख रूप से हिंदी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है ।

– अमित शाह (गृह मंत्री)

हिंदी : एकता और सांस्कृतिक गौरव की वैश्विक आवाज़

विश्व को यदि हम एक परिवार के रूप में देखें तो पाएगे कि - जन्म से ही हमें विविध भाषाओं , लिपियों एवं अनेक संस्कृतियों का उपहार बिना मांगे ही ईश्वर ने हमें दिया हुआ है। भाषाओं की उन्नति से ही अनेक पारंपरिक मूल्यों और रीति-रिवाजों को अगली पीढ़ी को प्रदान करना सुनिश्चित होता है।

विश्व में किसी भी देश की रीति –रिवाज , कला , संस्कृति व अनेक मूल्यों को समझने के लिए उस देश की भाषा का ज्ञान व्यवस्थित रूप होना आवश्यक है । यदि भाषा के ज्ञान में परिपूर्णता हासिल हो जाती है तो तो यह आसान होता है कि – इतिहास के पन्नो में '' क्या लिखा गया अथवा क्या बताया गया '' उसे सही रूप में समझा जा सके। इसके लिए उसका अनुवाद एवं सम्प्रेषण सही प्रकार से होना आवश्यक है।

विविध प्रकार की भाषाओं का हमारे देश में होना भी हमारे देश की उन्नति सांस्कृतिक की ओर इशारा करता है। इसी क्रम में भारत में बोले जाने वाली हिन्दी भाषा भी अपने आप में सरल स्वरूप को रखते हुये सम्प्रेषण का माध्यम बनती है। भारत देश के अलावा अनेक देशों में हिन्दी को बोलते हुये असंख्य लोग दिख जाएगे। परिणाम स्वरूप हम कह सकते है कि हिन्दी विभिन्न भाषाओं की तुलना में व्यक्त करने या सम्प्रेषण में सरल है एवं हिन्दी भाषा का दायरा बहुत व्यापक है .

वर्तमान परिद्रश्य में हिन्दी भाषा विश्व के अनेक देशों में संचार का माध्यम है । जिससे विश्व में मानसिक परिवेश से भिन्न होते हुये भी व्यापारिक निर्णय हिन्दी से प्रसारित एवं व्यक्त करने में असानी होती है। इस तरह से किसी भी अन्य देश में हिन्दी भाषा का समान्य बोलचाल के रूप में उपयोग होने से कहीं न कहीं अन्तर्मन में समता प्रतीत होती है, जिसके परिणाम स्वरूप वैश्विक एकता का एक कदम आगे की ओर अग्रसर होता है।

प्रत्येक देश की अपनी एक रीति –रिवाज , कला , एवं सांस्कृतिक धरोहर होती है जिसे विश्व पटल पर लाने के लिए - संचारित एवं प्रसारित करने की आवश्यकता होती है. जिससे सभी देशों के लोगों को प्रत्येक देश की कला एवं संस्कृति की विविधता से अवगत हो सके । इस स्थिति मे हिन्दी भाषा वर्तमान मे संचार एवं प्रसार का माध्यम बनने मे बहुत अहम भूमिका निभाने मे सफल हुई है तथा एक वैश्विक भाषा बनकर उभरी है . हिन्दी भाषा व्यक्त करने में सरल व सहज है. इसका योगदान कला एवं संस्कृति की विविधता बताने में उल्लेखनीय है। किसी भी देश की सांस्कृतिक धरोहर में वहाँ के धर्मों का विशेष योगदान होता है । धर्मों के माध्यम से ही वहाँ पर प्रचलित लोक कथाओं एवं अनेक पौराणिक कहानियों के संग्रह का पता चलता है । हिन्दी भाषा में अनुवाद व इसकी मौखिक अभिव्यक्ति कहीं न कहीं विश्व के जनसमूह को जोड़ने का कार्य करती है ।

हिन्दी भाषा वर्तमान में न केवल भारत देश में अपितु विश्व में भी विभिन्न विचारधाराओं के लोगों को एक दूसरे को आपस में जोड़ने का कार्य सेतु के रूप में करती हुई आ रही है। जिससे असंख्य जनसमूह को विश्व की सांस्कृतिक धरोहर को समझने का अवसर मिलता है ।

विश्व में किसी भी देश की कला व संस्कृति को समझने का माध्यम वहाँ की भाषा होती है। जब हिन्दी भाषा संचार का माध्यम बनती है तो सहज ही उसकी सरलता का अनुभव होता है एवं यही सरलता अपनेपन का एहसास कराती है , जो विश्व को एकसूत्र में पिरोने के लिए बाध्य करते प्रतीत होती है। इसके चलते जनसमूह अनेक सांस्कृतिक धरोहर से परिचित होते है एवं अपने देश की संस्कृति में कुछ भाग विलय करने की कोशिश करते है , जिससे एक समय उपरांत विविधता में भी एकता का आभास सभी लोगों को होने लगता है। जिसके परिणाम हम स्वरूप हम कह सकते है कि हिन्दी भाषा – एकता एवं सांस्कृतिक गौरव को बढ़ावा देने में वैश्विक स्तर की आवाज बनती नजर जा रही है एवं उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है।

ओम प्रकाश प्रजापति
सहायक प्रबंधक
व्या. का. मंदसौर

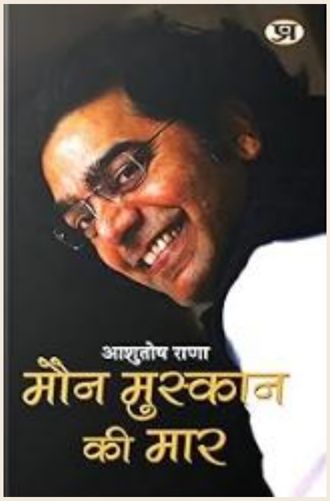

आशुतोष राणा द्वारा लिखित मौन 'मुस्कान की मार' सिर्फ एक किताब नहीं है, अपितु व्यंग्य की ऐसी अद्भुत धार है जो आज के सन्दर्भ में समाज कि हर सच्चाई से अवगत कराती है! इसमें लिखी हर कथा एवं उसके पात्र हमें अपने इर्द गिर्द ही महसूस होते है, कहानियों में श्रेष्ठ के शब्दों का चयन ठेठ ज़मीन से जुड़ा लगता है एवं ज़ेहन में मिट्टी की सौंधी खुशबू देता है। जितने अच्छे कलाकार उतने ही अच्छे कलमकार। आशुतोष राणा जी ने इस पुस्तक में कमाल ही किया है। यदि कुछ पढ़ना है तो इसे पढ़ें। ऐसे सटीक व्यंग मिलेंगे वर्तमान पर कि आप सोचते रह जायेंगे कि इतनी साफगोई और ऐसी शिल्प से भी लिखा जा सकता है, मुस्कान की मार एक बहुत ही शानदार व्यंग्य रचना है उसमें निहित चरित्रो को आप अपने आसपास पाएंगे लेखक की सूक्ष्म निरीक्षण दृष्टि पात्रों का चयन आपको हंसने गुदगुदाने के साथ सोचने पर भी मजबूर करता है .. पात्रों का भोलापन उनकी चालाकी उनकी लाचारी बेचारी सारे भाव लेखक ने जिस तरह से लिखे हैं सिद्ध करते हैं कि लेखक मानव मन को पढ़ने की अद्भुत क्षमता रखते है!

वे दिन

बालकनी में बैठकर मै चाय की चुस्कियों का आनंद ले रही थी, तभी मुझे पास की बस्ती के बच्चे साईकिल चलाते हुए दिखाई दिए। उन्हें देखकर मेरे होठों पर अपने आप मुस्कान आ गई और मै अपने बचपन की यादों में खो गई। हम चार भाई-बहन थे . मुझसे बड़े भैया और दो छोटे भाई थे। भैया को साईकिल चाहिए थी, उस समय चीजे इतनी आसानी से नहीं मिलती थी जितनी आजकल हम अपने बच्चो को उपलब्ध करा देते है। इसके लिए पहले भैया ने माँ को मनाया फिर माँ के द्वारा यह बात पिताजी तक पहुचाई गई। फिर कई दिनों तक माँ पिताजी को मानती रही , तब जाकर भैया के लिए साईकिल आई। जिस दिन साईकिल घर आई वह दिन हम भाई-बहनों के लिए बिलकुल त्यौहार जैसा था. हम सब भाई बहन साईकिल पर बैठकर ऐसे इतराते कि हम आसमान में उड़ रहे है। भैया के लिए तो साईकिल उनकी जान थी। वह सुबह उठकर सबसे पहले उसे साफ़ करते और किसी को भी उसे हाथ नहीं लगाने देते थे। उस समय साईकिल की सवारी आजकल की बड़ी-बड़ी गाड़ियों की सवारी से ज्यादा आनंदमयी थी। हवा से बात करते हुए, पक्ष्यों का कलरव सुनते हुए, अपने आप में खोये हुए, हम चारो भाई-बहन साईकिल की सवारी का लुत्फ़ उठाते। वह अविस्मरनीय है। उस समय साईकिल हमारे जीवन का अभिन्न अंग थी और हम सभी को सबसे अजीज थी। तभी बच्चो की हुडदंग की आवाज़ से मै अतीत के गलियारे से निकलकर वर्तमान में आ गई। आज भी जब घर जाती हूँ तो उस साईकिल को देखकर मन बहुत खुश होता है और एक बार फिर मै अपने बचपन को जी लेती हूँ।

प्रथम पुरस्कार विजेता
अंजू अग्रवाल
सहायक प्रबंधक
क्षे. का. इंदौर

जिम्मेदारी का सफ़र

एक गाँव की धुल भरी सड़को पर एक साईकिल तेजी से दौड़ रही थी . उस साईकिल पर चार लोग सवार थे। यह कोई साधारण सैर नहीं थी बल्कि संघर्ष और जिम्मेदारी की कहानी थी।

सबसे आगे साईकिल पर था किशोर लखन, मात्र 18 साल का लखन अपने तीन छोटे भाई-बहनों की देखभाल कर रहा था। माता-पिता के गुजर जाने के बाद , हार की पूरी जिम्मेदारी उसके कंधो पर आ गई थी। साईकिल पर बैठे उसके तीन भाई बहन स्कूल जाने के लिए तैयार थे।
लखन ने पड़ी छोड़ दी थी ताकि वह काम करके अपने भाई बहनों को पड़ी का खर्च उठा सके। दिन भर खेतो में मजदूरी करता था और वह उन्हें हर रोज़ साईकिल से स्कूल छोड़ने जाता था उसकी आँखों में थकान तो थी, लेकिन अपनी जिम्मेदारी निभाने का गर्व भी था। पीछे बैठी छोटी बहन आरती ने उत्साह से कहा , *" भैया जब मै डॉक्टर बन जाउंगी तो तुम्हारी सारी परेशानियाँ ख़त्म कर दूंगी।* " लखन ने मुस्कुराकर कहा " *पहले स्कूल की पढाई पूरी करो , फिर बड़े-बड़े सपने देखना।"* सबसे छोटा भाई दीपक जो लखन की गोद में बैठा था बोला " *भैय्या स्कूल कितनी दूर है* " लखन ने प्यार से उसके सर पर हाथ फेरते हुए कहा *" बस थोड़ी दूर और फिर तुम सब अपने सपनो की दुनिया में पहुच जाओगे।*

गाँव के कच्चे रास्तो से गुजराती हुई साईकिल मनो लखन के संघर्ष की कहानी कह रही थी। उसका शरीर थका हुआ था, लेकिन दिल में एक अदम्य जज्बा था अपने भाई-बहनों को एक बेहतर भविष्य देने का।

यह कहानी हमें सिखाती है कि जीवन में जिम्मेदारिय चाहे जीतनी बड़ी क्यों न हो , प्यार और समर्पण के साथ उन्हें निभाया जा सकता है। लखन जैसे लोग हमें दिखाते है कि सच्ची ताकत कठिन परिस्थितियों में भी अपनों का साथ निभाने है।

द्वितीय   पुरस्कार विजेता
संजय बाथम
प्रशासनिक अधिकारी
क्षे. का. इंदौर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) का गठन, केंद्र सरकार के राजभाषा विभाग ने हिन्दी के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए किया था. नराकास का मकसद, राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में आने वाली कठिनाइयों को दूर करना और राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाना है.

नराकास के बारे में ज़रूरी बातें:

- नराकास का गठन, नवंबर, 1976 में किया गया था.
- जिन राज्यों में 10 या उससे ज़्यादा सरकारी दफ़्तर हैं, वहां नराकास का गठन किया गया.
- जम्मू और केंद्र शासित प्रदेश में भी नराकास की मौजूदगी है.
- नराकास की बैठकों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए चर्चा होती है.
- नराकास की बैठकों में उत्कृष्ट कार्यप्रणाली की जानकारी का आदान-प्रदान होता है.
- जिन कार्यालयों को राजभाषा के प्रयोग में कठिनाई हो रही हो, उनकी कठिनाइयों के समाधान का भी हल निकाला जाता है.
- नराकास में, नगर में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालय/उपक्रम/बैंक आदि अनिवार्य रूप से सदस्य होते हैं.
- नराकास की बैठकों में नियमित रूप से भाग लेने के लिए, वरिष्ठतम अधिकारियों (प्रशासनिक प्रधानों) की उपस्थिति अनिवार्य है.

❖ **राजभाषा विभाग से संकलित जानकारी**

<u>**नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों में ओरिएण्टल इंश्योरेंस कंपनी का प्रतिनिधित्व**</u>

न.रा.का.स. उज्जैन
श्री कैलाश गोठवाल, प्रबंधक , व्या.का. उज्जैन

न.रा.का.स. खरगोन
जाकिर मंसूरी खान, सहायक प्रबंधक , व्या.का. खरगोन

न.रा.का.स. भोपाल
श्री पुष्पेन्द्र नामदेव , प्रबंधक , व्या. का. भोपाल

न.रा.का.स. इंदौर
श्री संजीब ऐड्डी , उपमहाप्रबंधक , क्षेत्रीय कार्यालय – इंदौर

न.रा.का.स. ग्वालियर
श्री उत्पल नयन प्रकाश , उप प्रबंधक , व्या. का. ग्वालियर

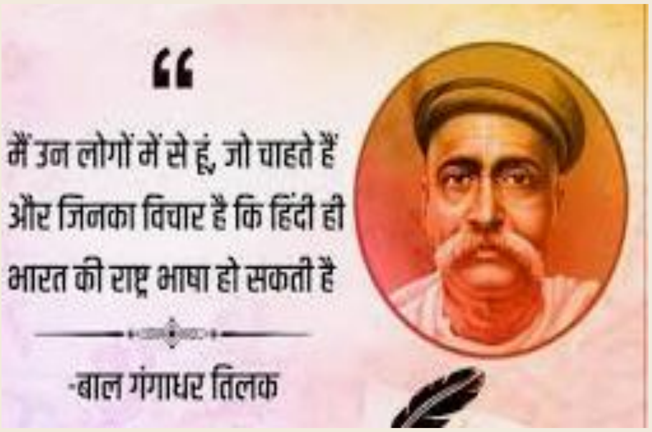

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति इंदौर उपक्रम की अर्धवार्षिक बैठक

राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, भोपाल के मार्गदर्शन मे इंदौर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति इंदौर (उपक्रम) की 26वीं अर्धवार्षिक समीक्षा बैठक का आयोजन दिनांक 14.11.2024 किया गया। बैठक का आयोजन श्री विनय शुक्ला, उपमहाप्रबंधक , नेशनल इंश्योरेंस कं. लि. की अध्यक्षता में किया गया . मुख्य अतिथि के रूप में श्री हरीश सिंह चौहान, कार्यालयाध्यक्ष, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय भोपाल एवं विशेष अतिथि श्री संजीब ऐद्दी, उपमहाप्रबंधक, ओरिएण्टल इंश्योरेंस कं. लि. एवं श्री विपिनकान्त सेठ, महा निदेशक, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण इंदौर उपस्थित रहे.

कार्यक्रम के आयोजन में नराकास इंदौर समिति के मार्गदर्शी दल के सदस्य राजीव किलेदार, नेशनल इंश्योरेंस कं., नज़मा खान, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, पम्मी शिंदे वासुरे, ओरिएण्टल इंश्योरेंस कं. लि. एवं हेमंत रंगशाही, ओरिएण्टल इंश्योरेंस कं. लि. से की मुख्य भूमिका रही. सदस्य सचिव सुमुख दशपुत्रे एवं राजीव किलेदार नेशनल इंश्योरेंस कं. द्वारा बैठक का सफल सह- सञ्चालन किया गया .

कार्यालयाध्यक्ष महोदय द्वारा छः माही रिपोर्टों की समीक्षा करते हुए निम्न बिन्दुओं को रेखांकित किया ।

1. राजभाषा नियम के धारा 3(3) के तहत कार्यालय मे जारी समस्त दस्तावेज़ द्विभाषी ही जारी किए जाने चाहिए, जिसका अनुपालन किया जा रहा है , इसे बनाए रखने की आवश्यकता है , इसमे किसी तरह की चूक स्वीकार्य नहीं है ।

2. राजभाषा नियम -5 के अनुसार कार्यालय मे पत्राचार का जो आंकड़ा भरा जा रहा है उसमे ई-मेल पत्राचार को भी अवश्य शामिल किया जाए । वर्तमान मे पत्राचार के माध्यमों मे परिवर्तन आया है जिसमे ई-मेल द्वारा पत्राचार एक सशक्त माध्यम है । अतः समस्त कार्यालय अपनी रिपोर्टों मे इनकी संख्या भी अवश्य भरे ।

3. फाइलों पर टिप्पण शत प्रतिशत हिन्दी मे ही की जानी चाहिए , इसमे कई बार लापरवाही से चूक हो जाती है अतः कार्यालयाध्यक्ष विशेष तौर पर इसका ध्यान रखे ।

4. प्रत्येक तिमाही मे एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया जाए यदि आवश्यक हो तो कार्यशाला का आयोजन ऑनलाइन भी किया जा सकता है । बैठकों का आयोजन भी प्रत्येक तिमाही मे नियमानुसार किया जाए एवं इन बैठकों मे कार्यालय मे राजभाषा के प्रयोगों मे वृद्धि हेतु चर्चा व निर्णय लिए जाए । बैठक का आयोजन संस्थान की अन्य बैठकों के साथ भी किया जा सकता है ।

5. वर्तमान सभी कम्प्युटर्स मे हिन्दी फॉन्ट उपलब्ध है जिससे कि समस्त अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा कम्प्युटर पर ज्यादा से ज्यादा कार्य हिन्दी मे ही करना चाहिए । करचरियों को इसके लिए प्रेरित किया जाना चाहिए ।

6. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों मे कार्यालय प्रमुख का स्वयं उपस्थित होना अतिआवश्यक है इस बाबत गृह मंत्रालय द्वारा निर्देश समय-समय पर कार्यालयों को प्रेषित किए जाते रहे है । यह सुनिश्चित करने का दायित्व कार्यालयाध्यक्ष का है कि बैठक की सूचना मिलने पर वे अपनी व्यस्तताओं के साथ सामंजस्य बैठाकर अपनी उपस्थिती सुनिश्चित करे ।

7. कई कार्यालयों मे जहां हिन्दी अधिकारी नहीं होते है वहाँ आमतौर पर यह पाया गया है कि वे कार्यालय राजभाषा क्रियान्वयन संबंधी दायित्वों के प्रति उदासीन रहते है अतः यह आवश्यक है उन कार्यालयों मे कार्यालय प्रमुख द्वारा हिन्दी समन्वयकों की नियुक्ति अवश्य की जाए एवं नामित अधिकारी का पूर्ण विवरण नराकास सचिवालय को प्रेषित किया जाए, इस प्रकार वे कार्यालय सही रूप मे राजभाषा कार्यान्वयन मे अपना योगदान दे पाएंगे ।

8. हिन्दी के प्रगामी प्रयोगों से संबन्धित त्रेमासिक रिपोर्ट ऑनलाइन भरने हेतु राजभाषा विभाग की वैबसाइट पर प्रत्येक सदस्य कार्यालय अपना पंजीयन अवशय कराए व प्रत्येक तिमाही मे आंकड़े राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय को जमा करे ।

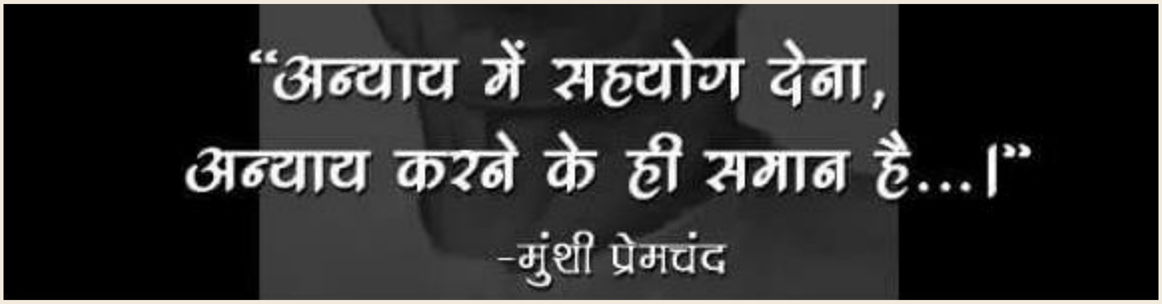

रश्मि शर्मा का दूसरा कहानी-संग्रह 'सपनों के ढाई घर' इस बात का प्रमाण है कि कथा-लेखन उनके लिए एक गम्भीर एवं जिम्मेदारी भरा सतत कर्म है। जाहिरन, इसका निर्वाह वह अपनी निरन्तर रचनात्मकता और सार्थक हस्तक्षेप से कर रही हैं। इस संग्रह की तमाम कहानियाँ अपने परिवेश के प्रति उनकी सजग संवेदनशीलता और उनमें निहित जीवन-सत्यों को खोज निकालने की उनकी दृष्टि एवं कौशल से सम्भव हुई हैं। ये कहानियाँ विषय वैविध्य के कारण जितना पाठकों को समृद्ध करती हैं, उतना ही मनुष्य मन की जटिलताओं में उतरकर उनके अवगुंठनों को खोलते हुए चकित भी करती हैं।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति इंदौर उपक्रम द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियां

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण द्वारा आयोजित “निबंध प्रतियोगिता “ में क्षे. का. इंदौर से अंजू अग्रवाल एवं वैभव केसरवानी प्रतिभागी रहे .

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अर्धवार्षिक बैठक दिनांक 14.11.2024 में उपमहाप्रबंधक व राजभाषा अधिकारी उपस्थित रहे

न.रा. का.स. इंदौर उपक्रम के सदस्य कार्यालयों से मार्गदर्शी दल के सदस्य गण

मै उन लोगो में से हूँ जो यह चाहते और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है।

- **बाल गंगाधर तिलक**

" एक पल "

एक पल की धुप है,
और एक पल की छाँव है।
एक पल जो ढह गया तो,
एक पल का ठांव है।

खो गया था शून्य में,
जो एक पल था अभी।
बीत राग बन गया ,
जो एक पल हुआ था कभी।

स्वर से राग बन गया,
मौन से चुप-चुप सा सब।
भौर का आना हुआ और,
एक वो पल ढह गया।

सांसो का स्पंदन हुआ ,
और एक पल निकल गया।
चलते-चलते भोर भी,
और देखो पहर में ढल गया।

साँझ की बेला हुई ,
सूरज भी और देखो ढल गया।
एक पल और एक पल ,
और समय निकल गया।

विक्रम सिंह
सहायक प्रबंधक
व्या. का. – रायसेन

संतुलित जीवन का गीत

काम ही सब कुछ, ये सोचना नहीं,
जीवन की खुशियाँ खोना नहीं

थोडा ठहरो, थोडा मुस्कुराओं,
राह में चलते गीत गुनगुनाओ।

दिन-रात मेहनत ठीक है सही ,
पर खुद से दुरी कैसे सही।

अपनों संग भी समय बिताओं,
जीवन पर संतुलन तुम पाओं ।

सपने पुरे करना है जरुर ,
पर मन का आंस भी है दस्तूर।

खुशियों का संसार बुलाए ,
जहाँ दिल हँसता , मन मुस्कुराए।

काम हो अपनी जगह पर सही ,
पर जीवन में महक हो नई।

थोडा सुकून , थोडा आराम ,
तभी बने जीवन का पैगाम।

आओ मिलकर संतुलन बनाए,
काम और जीवन संग सजाएं।

हर दिन हो खुशहाल हमारा,
यही हो मंजिल, यही हो सहारा।

आकाश खरे
सहायक प्रबंधक
क्षे. का. इंदौर

**भारत में हर भाषा का सम्मान है,
पर हिंदी ईश्वर का वरदान है**

अनोखी दास्तान

मुकेश और अनुज प्रभात फेरी के साथी थे। वैसे दोनों की पहचान ज्यादा पुरानी नहीं थी। मुकेश अपनी पत्नी सुधा के साथ रहते थे तो अनुज अपने पोता-पोती व् बेटे के साथ रहते थे । दोनों ने एक दुसरे का मकान बाहर से ही देखा था । मुकेश हमेशा अपनी पत्नी के खान-पान, रहन-सहन की तारीफ करता था तो अनुज बेटा –बहु बच्चो के गुण गाते नहीं थकता था ।

जब 3-4 दिन मुकेश सुबह भ्रमण पर नहीं आये तो अनुज के कदम उनके घर की तरफ अनायास ही मुड गए . आँगन एकदम साफ़ रंगोली से सुसज्ज था । मोगरे के फूलो से पूरा परिसर महक रहा था । दरवाजा खुला ही था कि अन्दर का नज़ारा देखते ही अनुज के कदम रूक गए . मुकेश जी बिस्तर पर लेटी हुई अपनी पत्नी को चाय पिला रहे थे ।
थोड़ी देर बाद जब चाय पिला के पत्नी का मुह पोछ के पीछे मुड़ कर देखने पर मुकेश जी की निगाहे अनुज जी से मिली । आज तक मुकेश जी ने कभी भी अपनी पत्नी की बीमारी का जिक्र नहीं किया था बल्कि हमेशा पत्नी के काम की तारीफ ही की थी . मुकेश जी ने हाथ पकड़कर अनुज जी को सोफे पर बिठाया और बताया कि 5 साल पहले पत्नी का दुर्घटना में एक साइड का हिस्सा काम करना बंद हो गया था तब से वह बिस्तर पर ही है . एक छोटे बच्चे की तरह पूरा ख्याल रखना पड़ता है । इधर कुछ दिनों से घर में काम वाली बाई नहीं आने से सब काम उन्ही को करना पड़ रहा है । इस वजह से वह सुबह से नहीं निकल पाए । अनुज जी थोड़ी देर तक आवक रह गए, दिमाग को कुछ सूझ ही नहीं रहा था ।

इतने में भयंकर शोर से अनुज की सोच में खलल पड़ा । पोता-पोती दादाजी-दादाजी चिल्लाते हुए आकर उन्हें लिपट गए । जैसे ही उनका परिचय करते बहु चिल्लाते हुई अन्दर आई बोली " ये क्या पिताजी कब से चाय के लिए इंतजार कर रहे थे और आप आराम से गप लगा रहे हो। जल्दी से चाय-दूध बना के हम सबको दीजिए ऑफिस पहुचने में देर हो रही है .

दोनों दोस्त एक दुसरे को अपलक देख रहे थे और सोच रहे थे यही है जिंदगी की अनोखी दास्ताँ ....

मनीषा पाटिल
उप प्रबंधक
क्षे. का. इंदौर

जान्हवी गंगा

सदियों से गंगा माँ पतित पावनी, पाप नाशिनी कहलाई . ऐसे ही अविरल धारा पावन बिटियाँ जान्हवी के रूप में एक परिवार में आई ।

अंतर्मन में करुणा सभी के लिए सम्मान, प्रेम, बुराई का भरपूर विरोध में जन्मजात संस्कार वो पाई थी । माता–पिता ने भी सुसंस्कारी शिक्षित बनाया। समय आने पर समीर से विवाह करा कर विदा किया । सम्पूर्ण पतिव्रता वृत्त पालन , समर्पित आदर्श बहू, त्याग तपस्या की मूर्ती जैसी माँ सभी रूपों में शत–प्रतिशत लाने की कोशिश करती थी जाह्नवी । परन्तु एक पुलिस कर्मी होने के कारण कुछ उन्नीस/बीस हो जाती थी । उस पर फिर घर चलने की जिम्मेदारी भी अधिकांश उसके हिस्से ही आती थी । दूसरी ओर मित्रगन, सहकर्मी, अधिकारीगण, समाज के बुद्धिजीवी उसे सफल व् प्रेरणादायी मानते थे ।

अविराम चिंतन चलता ही रहता उसके मन में । समीर (हवा) और जान्हवी (गंगा) का मिलन जितना सुखकर उतना ही कभी–कभी विनाशकारी भी । कभी मन को सुकून देने वाली धाराएं तो कभी जान्हवी के सफल और समीर के असफल होने का दोषारोपण भी। वही जो सदियों से होता आया है । गंगा सबको पावन करती है, प्यास बुझती है, जीवन दायिनी है, पर दूषित है मैली है , ये गंगा हमेशा समीर के साथ जीवन की नई उचाईयों को छूना चाहती थी। समीर कभी तो बहुत प्रेम, करुना, समर्पण के साथ उसे सम्पूर्ण करता तो कभी घृणा , उलाहना, उपेक्षा, दोषारोपण से मलिन करता । समीर और जान्हवी जब चालीस की और बढ़े तो जान्हवी ने फिर अपना अधुरा सपना और अपने स्वयं की पूर्णता की ओर कदम बढ़ाए ।

समय और इश्वर के साथ से एक सफल प्रशासनिक अधिकारी, जिम्मेदार माँ , कुशल समाज सेवी व् प्रेरनादायी महिला बन ही गई जान्हवी पतित पावनी गंगा अथाह समूह में इस संसार से विदा लेकर मिल ही गई ।

दिलीप जाटवा
वरिष्ठ सहायक
क्षे. का. इंदौर

प्रकृति का उपहार

एक दिन बैठे-बैठे सोचा ,
प्रकृति ने दिया उपहार अनोखा,,

रमणीय दृश्य प्यारा है ,
सुंदर अद्भुत नज़ारा है ,,

नदियों की कल-कल का गीत ,
लेता हमारे मन को जीत ,,

पक्षियों की चहचहाहट का राग,
लाता लबों पर मुस्कराहट आप ,,

फुल, पत्तियां , पेड़ और पौधे,
जिनको देख मन है झूमे ,,

सूर्य चन्द्रमा और टिमटिमाते तारे,
जाते सभी अनोखे दृश्य पर वारे ,,

इन्द्रधनुष के सतरंगी रंगों का समागम,
हे, परमपिता परमेश्वर का आगम ,,

पृकृति की है छठा निराली ,
सुन्दर, अप्रतिम, अनोखी, प्यारी ,,

प्रकृति तो है अनगिनत उपहारों का खज़ाना,
समस्त वर्णन मुमकिन नहीं कर पाना ,,

एक दिन बैठे-बैठे सोचा
प्रकृति ने दिया उपहार अनोखा ,,

अंजू अग्रवाल
सहायक प्रबंधक
लेखा विभाग
क्षेत्रीय कार्यालय- इंदौर

कहावतो की कहानियां

एक बार एक लोमड़ी अंगूरों के बाग से गुजर रही थी। चारों ओर स्वादिष्ट अंगूरों के गुच्छे लटक रहे थे। मगर वे सभी लोमड़ी की पहुंच से बाहर थे।

अंगूरों को देखकर लोमड़ी के मुंह में बार-बार पानी भर आता था। वह सोचने लगी-'वाह ! कितने सुंदर और मीठे अंगूर हैं। काश मैं इन्हें खा सकती।' यह सोचकर लोमड़ी उछल-उछल कर अंगूरों के गुच्छों तक पहुंचने की कोशिश करने लगी। परंतु वह हर बार नाकाम रह जाती। बस, अंगूर के गुच्छे उसकी उछाल से कुछ ही दूर रह जाते थे। अंत में बेचारी लोमड़ी थक हर कर अपने घर की ओर चल दी। पास ही में पेड़ पर बैठे एक कौवे ने व्यंग्य से पूछा, क्या बात है काकी, अंगूर नहीं खाओगी? तो लोमड़ी तमक कर बोली, अरे भैया ये अंगूर खट्टे हैं. कौआ हंस कर बोला, जो वस्तु प्राप्त नहीं हो सकती उसे खराब बताना ही ठीक है. इसी आशय में इस कहावत का प्रयोग किया जाता है.

एक काजी का न्याय करने के मामले में दूर-दूर तक नाम था। एक बार उसके यहाँ एक अजीब मुकदमा आया। चोरी के शक में चार आदमियों को कचहरी में हाजिर किया गया था। गवाहों के बयान सुनने के बाद और सबूतों को देखने-समझने के बाद असली चोर का निर्णय नहीं हो पा रहा था फिर भी वह असली चोर को पकड़ने के लिए लगातार सोचे जा रहा था।वह चोरों की कमजोरियों और आदतों के बारे में सोचने लगा। वह जानता था कि चोर डरपोक होता है और उसे हमेशा इस बात का डर बना रहता है कि वह पहचान न लिया जाए।काजी ने ये सारे मुजरिमों को गौर से देखा। अचानक एक उपाय उसके दिमाग में एक विचार कौंध गया। काजी ने देखा कि सब मुजरिमों की दाढ़ियाँ हैं।उसने अँधेरे में एक तीर छोड़ा. मुजरिमों की ओर इशारा करते हुए वह जोर से बोला "चोर की दाड़ी में तिनका।"असली चोर ने सोचा कि कहीं मेरी दाढ़ी में तो तिनका नहीं है। यही सोचकर उसने दाढ़ी पर हाथ फेरा।दाढ़ी पर हाथ फेरते ही काजी ने कहा, चोर यही है, इसे गिरफ्तार कर लिया जाए और बाकी सबको छोड़ दिया जाए।तभी से यह कहावत बनी – चोर की दाढ़ी में तिनका.

देश की आत्मा है हिन्दी

एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। यह विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है। हिंदी भारत संघ की राजभाषा होने के साथ ही ग्यारह राज्यों और तीन संघ शासित क्षेत्रों की भी प्रमुख राजभाषा है। संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल अन्य इक्कीस भाषाओं के साथ हिंदी का एक विशेष स्थान है।

राजभाषा हिंदी के विकास के लिए खासतौर से राजभाषा विभाग का गठन किया गया है। भारत सरकार का राजभाषा विभाग इस दिशा में प्रयासरत है कि केंद्र सरकार के अधीन कार्यालयों में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में हो। इसी कड़ी में राजभाषा विभाग द्वारा प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया जाता है।

14 सितंबर, 1949 का दिन स्वतंत्र भारत के इतिहास में बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसी दिन संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इस निर्णय को महत्व देने के लिए और हिन्दी के उपयोग को प्रचलित करने के लिए साल 1953 के उपरांत हर साल 14 सितंबर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है।

राजभाषा विभाग द्वारा नई दिल्ली के विज्ञान भवन में हिंदी दिवस समारोह का आयोज के उपलक्ष्य पर राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द ने देश भर के विभिन्न मंत्रालयों / विभागों/ कार्यालयों के प्रमुखों को राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य हेतु पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा, "**हिन्दी अनुवाद की नहीं बल्कि संवाद की भाषा है। किसी भी भाषा की तरह हिन्दी भी मौलिक सोच की भाषा है।** मुझे इस बात की खुशी है कि आज सरकार के कर्मचारियों तथा नागरिकों को मौलिक पुस्तक लेखन के लिए पुरस्कार दिये गये हैं।"

हिन्दी दिवस के मौके पर राजभाषा विभाग द्वारा सी डैक के सहयोग से तैयार किये गये लर्निंग इंडियन लैंग्वेज विद आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (लीला) के मोबाइल ऐप का लोकार्पण भी किया गया। इस ऐप से देश भर में विभिन्न भाषाओं के माध्यम से जन सामान्य को हिंदी सीखने में सुविधा और सरलता होगी तथा हिंदी भाषा को समझना, सीखना तथा कार्य करना संभव हो सकेगा। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने इसके लिए राजभाषा विभाग के योगदान की सराहना करते हुए

कहा, '**लीला मोबाइल ऐप**' के जरिये हिन्दी सीखने की ऑनलाइन सुविधा लोगों तक पहुँचाने के लिए मैं राजभाषा विभाग की प्रशंसा करता हूँ।'

हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने अनेक पुरस्कार योजनाएं शुरू की हैं। सरकार द्वारा हिंदी में अच्छे कार्य के लिए ''राजभाषा कीर्ति पुरस्कार योजना'' के अंतर्गत शील्ड प्रदान की जाती है। हिंदी में लेखन के लिए राजभाषा गौरव पुरस्कार का प्रावधान है। आधुनिक ज्ञान विज्ञान में हिंदी में पुस्तक लेखन को प्रोत्साहन देने के लिए भी सरकार पुरस्कार प्रदान करती है। इन प्रोत्साहन योजनाओं से हिंदी के विस्तार को बढ़ावा मिल रहा है।

केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का अधिकाधिक उपयोग सुनिश्चित करने हेतु भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा उठाए गए कदमों के परिणामस्वरूप कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करना अधिक आसान एवं सुविधाजनक हो गया है। इसी क्रम में राजभाषा विभाग द्वारा वेब आधारित सूचना प्रबंधन प्रणाली विकसित की गई है जिससे भारत सरकार के सभी कार्यालयों में हिंदी के उत्तरोत्तर प्रयोग से संबंधित तिमाही प्रगति रिपोर्ट तथा अन्य रिपोर्टें राजभाषा विभाग को त्वरित गति से भिजवाना आसान हो गया है। सभी मंत्रालयों और विभागों ने अपनी वेबसाइटें हिंदी में भी तैयार कर ली हैं। सरकार के वि भि न्न मंत्रालयों एवं वि भागों द्वारा संचालि त जन कल्याण की वि भि न्न योजनाओं की जानकारी आम नागरि कों को हिन्दी में मि लने से गरीब, पि छड़े और कमजोर वर्ग के लोग भी लाभान्वि त होते हुए देश की मुख्यधारा से जुड़ रहे हैं।

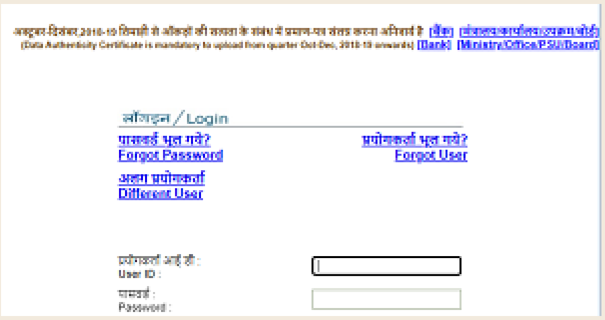

देश की स्वतंत्रता से लेकर हिन्दी ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त की हैं। भारत सरकार द्वारा विकास योजनाओं तथा नागरिक सेवाएं प्रदान करने में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। हिंदी तथा प्रांतीय भाषाओं के माध्यम से हम बेहतर जन सुविधाएं लोगों तक पहुंचा सकते हैं। इसके साथ ही विदेश मंत्रालय द्वारा ''विश्व हिंदी सम्मेलन'' और अन्य अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाने का कार्य किया जा रहा है। इसके अलावा प्रत्येक वर्ष सरकार द्वारा ''प्रवासी भारतीय दिवस'' मनाया जाता है जिसमें विश्व भर में रहने वाले प्रवासी भारतीय भाग लेते हैं। विदेशों में रह रहे प्रवासी भारतीयों की

उपलब्धियों के सम्मान में आयोजित इस कार्यक्रम से भारतीय मूल्यों का विश्व में और अधिक विस्तार हो रहा है। विश्वभर में करोड़ों की संख्या में भारतीय समुदाय के लोग एक संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का इस्तेमाल

कर रहे हैं। इससे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी को एक नई पहचान मिली है। यूनेस्को की सात भाषाओं में हिंदी को भी मान्यता मिली है। पिछले वर्ष सितंबर माह में हमारे प्रधानमंत्री द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में ही अभिभाषण दिया गया था। विश्व हिंदी सचिवालय विदेशों में हिंदी का प्रचार-प्रसार करने और संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाने के लिए कार्यरत है। उम्मीद है कि हिंदी को शीघ्र ही संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा का दर्जा भी प्राप्त हो सकेगा।

हिंदी आम आदमी की भाषा के रूप में देश की एकता का सूत्र है। सभी भारतीय भाषाओं की बड़ी बहन होने के नाते हिंदी विभिन्न भाषाओं के उपयोगी और प्रचलित शब्दों को अपने में समाहित करके सही मायनों में भारत की संपर्क भाषा होने की भूमिका निभा रही है। हिंदी जन-आंदोलनों की भी भाषा रही है। हिंदी के महत्त्व को गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने बड़े सुंदर रूप में प्रस्तुत किया था। उन्होंने कहा था, 'भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी'। हिंदी के इसी महत्व को देखते हुए तकनीकी कंपनियां इस भाषा को बढ़ावा देने की कोशिश कर रही हैं। यह खुशी की बात है कि सूचना प्रौद्योगिकी में हिन्दी का इस्तेमाल बढ़ रहा है। आज वैश्वीकरण के दौर में, हिंदी विश्व स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है। आज पूरी दुनिया में 175 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा पढ़ाई जा रही है। ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें बड़े पैमाने पर हिंदी में लिखी जा रही है। सोशल मीडिया और संचार माध्यमों में हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है।

भाषा का विकास उसके साहित्य पर निर्भर करता है। आज के तकनीकी के युग में वि ज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में भी हिंदी में काम को बढ़ावा देना चाहिए ताकि देश की प्रगति में ग्रामीण जनसंख्या सहित सबकी भागीदारी सुनिश्चित हो सके। इसके लिए यह अनिवार्य है कि हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में तकनीकी ज्ञान से संबंधित साहित्य का सरल अनुवाद किया जाए। इसके लिए राजभाषा विभाग ने सरल हिंदी शब्दावली भी तैयार की है। राजभाषा विभाग द्वारा राष्ट्रीय ज्ञान-विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन योजना के द्वारा हिंदी में ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकों के लेखन को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे हमारे विद्यार्थियों को ज्ञान-विज्ञान संबंधी पुस्तकें हिंदी में उपलब्ध होंगी। हिन्दी भाषा के माध्यम से शिक्षित युवाओं को रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध हो सकें, इस दिशा में निरंतर प्रयास भी जरूरी है।

भाषा वही जीवित रहती है जिसका प्रयोग जनता करती है। भारत में लोगों के बीच संवाद का सबसे बेहतर माध्यम हिन्दी है। इसलिए इसको एक-दूसरे में प्रचारित करना चाहिये। इस कारण हिन्दी दिवस के दिन उन सभी से निवेदन किया जाता है कि वे अपने बोलचाल की भाषा में भी हिंदी का ही उपयोग करें। हिंदी भाषा के प्रसार से पूरे देश में एकता की भावना और मजबूत होगी।

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने नई दिल्ली में राजभाषा हीरक जयंती समारोह और चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन को संबोधित किया

" हिंदी दिवस का दिन राजभाषा को संपर्क, जन, तकनीक और अब अंतर्राष्ट्रीय भाषा बनाने का दिन है. प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने नई शिक्षा नीति में मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा पर बल देने का काम किया है. भारतीय भाषा अनुभाग आने वाले वर्षों में एक वटवृक्ष की भांति सभी भारतीय भाषाओं की सुरक्षा का केन्द्र बनेगा आने वाला समय भारत की भाषाओं का समय है. सभी भारतीय भाषाओं को मजबूत कर हिंदी के साथ सभी का संवाद स्थापित किए बिना राजभाषा का प्रचार-प्रसार नहीं हो सकता. हिंदी और स्थानीय भाषाओं के बीच कभी स्पर्धा नहीं हो सकती. हिंदी व सभी भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की पूरक हैं आने वाले वर्षों में हिन्दी शब्द सिंधु शब्दकोष को विश्व का सबसे बड़ा शब्दकोष बनाना है हिंदी को संघर्ष के साथ नहीं बल्कि साहसिक स्वीकार्यता के साथ आगे बढ़ाना है जो देश अपनी भाषाओं की रक्षा नहीं कर पाते, वो अपने इतिहास, साहित्य, संस्कार से कट जाते हैं. आज UN की भाषा बनने के साथ-साथ हिंदी 10 से अधिक देशों की द्वितीय भाषा है. जिस दिन हम अपनी भाषाओं को गंवा देंगे उस दिन देश की एकता खतरे में आ जाएगी केवल माँ ही है जो भारतीय भाषाओं को बचा सकती है. भारतीय भाषा अनुभाग हिंदी के किसी भी लेख, भाषण या पत्र का भावानुवाद देश की सभी भाषाओं में करेगा गृह मंत्री ने राजभाषा हीरक जयंती के अवसर पर 'राजभाषा भारती' पत्रिका के हीरक जयंती विशेषांक, स्मारक डाक टिकट और स्मारक सिक्के का लोकार्पण और भारतीय भाषा अनुभाग का शुभारंभ किया.

चतुर्थ अखिल भारतीय सम्मलेन में ओरिएण्टल इंश्योरेंस कंपनी से राजभाषा अधिकारीयों द्वारा अपने क्षेत्रीय कार्यालय का प्रतिनिधित्व किया गया

राजभाषा हीरक जयंती के अवसर पर गृह मंत्री द्वारा डाक टिकट जारी

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा भारतीय भाषा अनुभाग का लोकार्पण

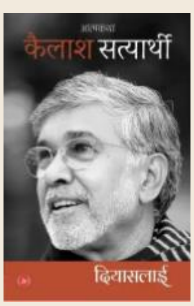

'दियासलाई' नोबेल शान्ति पुरस्कार से सम्मानित और भारत समेत पूरे विश्व में बच्चों के प्रति संवेदना को एक आवश्यक लोकतांत्रिक मूल्य के रूप में स्थापित करनेवाले कैलाश सत्यार्थी की आत्मकथा है। अपनी इस आत्मकथा में वे हमें अपने संघर्षपूर्ण जीवन की कथा भी बताते हैं और अपने उन प्रयासों की भी जानकारी देते हैं जो उन्होंने भारत और विश्व-भर के बच्चों की मुक्ति और कल्याण के लिए किए।

वे ही थे जिन्हें 'ग्लोबल मार्च अगेंस्ट चाइल्ड लेबर' जैसे महा-आन्दोलन का विचार आया और जिसके तहत उन्होंने दुनिया के 186 देशों की यात्रा करते हुए लाखों बच्चों से सम्पर्क किया और उन्हें आजादी के विचार से अवगत कराया। शिक्षा के लिए भी उन्होंने विश्व-स्तर पर कैम्पेन चलाया।
अपने मानवीय और सामाजिक कार्यों के लिए उन्हें अनेकों बार पुरस्कृत भी किया गया लेकिन अपना वास्तविक पुरस्कार वे उन बच्चों की मुस्कराहट को मानते हैं, जो उन्होंने हर ओर से निराश और समाज के क्षुद्र स्वार्थों की भेंट चढ़े बच्चों को दी।

सहज और सम्प्रेषणीय भाषा में लिखी हुई उनकी यह आत्मकथा हमें प्रेरित भी करती है, संवेदनशील भी बनाती है और उन भीषण तथ्यों से भी परिचित कराती है जो हमारे सामने दुनिया के विराट नक़्शे पर बिलखते बच्चों का पता देते हैं।

कितनी विधाओं में बहता है? एक दास्तां उस मुहब्बत की सुनो....

अमृता साहिर और थे इमरोज!

ये इश्क भी बड़ा अद्भुत है

जिसे देखा ख्वाब में ,

फिर, ख्वाब से जागने पर भी उसी को देखा...

हाँ इश्क दोनों को हुआ ,

अमृता उस पथ पर आगे निकल गई ,

साहिर बेबसी में बेगाना हो गया!

हाँ वो इश्क ही था

जो साथ न रहकर भी

उसी का था।

बुझे सिगरेट के गुटकों में,

इतनी प्रेम स्मृतियाँ थीं।

कि उसकी ना मौजूदगी में भी,

वो अमृता उसी की थी।

सुलगती सिगरेट् से उठता वलय धुआ...

अर्श के कोने कोने फैल गया।

हां, साहिर तो स्वप्न बन चला गया।

पर अपने होने का दीप उसके उर में ,

सदा के लिए प्रदीप्त कर गया।

न जोर चलता मुहब्बत में किसी का,

ये तो तुम्हारी निगाहों का भ्रम था।

जो छुपा रह गया उसे माहिर कह दिया।

और जो उजागर हुआ उसे जग जाहिर।

दरअसल प्रेम में धुआं जहां से उठता है ,आग वहाँ नहीं होती, वो तो राख में दबे अनबुझे अंगारों में हवा के झोंके का इंतजार करती है ।

जैसे इमरोज साथ में थे पर सत्य तो ये है प्रेम की तपिश तो साहिर से ही थी!

गर साथ रहने से प्यार मिल जाता,

तो अमृता को इमरोज की पीठ पर

साहिर, साहिर और साहिर नहीं लिखना पड़ता।

अब प्रेम की दूसरी विधा।

इधर इमरोज अपनी मुहब्बत में इतने परिपक्व थे कि उन्होंने प्रेम की मूरत को बेशर्त

अपनी रंग कुचिका से हृदय के केनवास पर उकेरते रहे...

इस प्रेम के बौध से सराबोर हो, अमृता ने अपनी अंतिम रचना में गिले स्वरूप इमरोज के लिए लिखा।

मैं तुम्हें फिर मिलूँगी.....

सपना....

सपना सोनी
वरिष्ठ सहायक
व्या. का. 5 इंदौर

ओरिएण्टल परिवार की विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियां

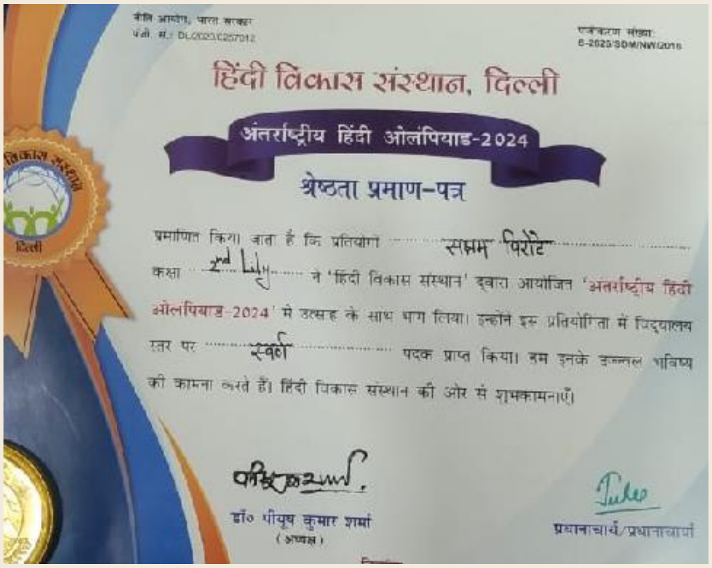

हिंदी विकास संस्थान, दिल्ली

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी ओलंपियाड-2024

श्रेष्ठता प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि प्रतियोगी सक्षम पिरोटे कक्षा 2nd Lily ने 'हिंदी विकास संस्थान' द्वारा आयोजित 'अंतर्राष्ट्रीय हिंदी ओलंपियाड-2024' मे उत्साह के साथ भाग लिया। इन्होंने इस प्रतियोगिता में विद्यालय स्तर पर स्वर्ण पदक प्राप्त किया। हम इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं। हिंदी विकास संस्थान की ओर से शुभकामनाएँ।

डॉ० पीयूष कुमार शर्मा (अध्यक्ष)

प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या

श्री कैलाश जैन के नातिन सक्षम पिरोते द्वारा अंतराष्ट्रीय हिंदी ओलंपियाड में स्वर्ण पदक प्राप्त किया .

श्री हरीश शर्मा, सेवानिवृत्त प्रबंधक (राजभाषा) को मध्यभारत साहित्य समिति इंदौर द्वारा हिंदी भाषा के क्षेत्र में योगदान के लिए सम्मानित किया गया .

कांच मंदिर इंदौर

कांच जैसा मंदिर के नाम से स्पष्ट होता है, यह मंदिर पूरी तरह कांच से बना है, इसकी छत वाली दीवार और नीचे का तल भी कांच से जड़ा हुआ है |

इसे सेठ हुकुमचंद मंदिर के नाम से भी जाना जाता है | यह मंदिर सेठ हुकुमचंद द्वारा नष्ट कर दिया गया था | श्री विक्रम सवंत 1978 मिति आषाढ़ सुदी 7 सोमवार सन 1921 में मूर्ति स्थापना की गयी | यह एक दिगम्बर जैन मंदिर है और इस मंदिर में मध्य में श्री शांतिनाथ भगवान और उनके बाएँ हाथ की देवी और श्री चंद्रप्रभा भगवान एवं बाई और आदिनाथ भगवान विराजे हैं | शांतिनाथ भगवान की मूर्ति काले पत्थर की बनी है जिसे जयपुर में स्थापित किया गया था | प्रोटोटाइप सारा वर्क काँच का काम हुआ और यह काँच से बेल्जियम मंगाया गया था | व खम्भे लाल पत्थर से बना है इसका दरवाजा लकड़ी का बना हुआ है और उस पर चाँदी की परत बिछ गयी है | इस मंदिर में बनाई गई कलाकारी और कांच की कारीगरी ही दिखती है यहां पर ईरान और जयपुर के कलाकारों द्वारा बनाई गई कलाकृतियां और कांच की मूर्तियां दिखाई देती हैं। इस मंदिर में बनाया गया कांच और कलाकारी के कारण यहां दिखाई देता है 3डी प्रभाव | मंदिर सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक यह मंदिर आम जनता के लिए खुला रहता है |

काच मंदिर में जैन मनाए जाते हैं। सुगंध के चूर्ण का उपयोग जाते हैं। इंदौर में का त्यौहार) यहाँ एक आयोजित किया जाता है, अन्य जैन मंदिरों में भी स्वर्ण पालकी निकाली जाती है।

त्यौहार बहुत उत्साह से दशमी पर, बहुरंगी चावल करके विशेष मंडल बनाए सामूहिक क्षमावाणी (क्षमा केंद्रीय संस्था के रूप में हालाँकि यह इंदौर के मनाया जाता है। यहाँ से पर वार्षिक रथ यात्रा

क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर द्वारा सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया

कबीर दास के प्रेरणादायक दोहे

1. बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय। जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय॥
(अर्थ- कबीर कहते हैं कि जब मैं इस दुनिया में बुराई खोजने गया, तो मुझे कुछ भी बुरा नहीं मिला और जब मैंने खुद के अंदर झांका तो मुझसे खुद से ज्यादा बुरा कोई इंसान नहीं मिला।)

2. धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय। माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय॥
(अर्थ- कबीर दास जी कहते हैं कि धैर्य रखें धीरे-धीरे सब काम पूरे हो जाते हैं, क्योंकि अगर कोई माली किसी पेड़ को सौ घड़े पानी से सींचने लगे तब भी फल तो ऋतु आने पर ही लगेगा।)

3. चिंता ऐसी डाकिनी, काट कलेजा खाए। वैद बिचारा क्या करे, कहां तक दवा लगाए।।
(अर्थ- कबीर दास जी कहते हैं कि चिंता एक ऐसी डायन है जो व्यक्ति का कलेजा काट कर खा जाती है। इसका इलाज वैद्य नहीं कर सकता। वह कितनी दवा लगाएगा। अर्थात चिंता जैसी खतरनाक बीमारी का कोई इलाज नहीं है।)

4. साईं इतना दीजिए, जा मे कुटुम समाय। मैं भी भूखा न रहूं, साधु ना भूखा जाय।।
(अर्थ- कबीर दस जी कहते हैं कि परमात्मा तुम मुझे इतना दो कि जिसमें मेरा गुजरा चल जाए, मैं खुद भी अपना पेट पाल सकूं और आने वाले मेहमानों को भी भोजन करा सकूं।)

5. गुरु गोविंद दोउ खड़े, काके लागूं पांय। बलिहारी गुरु आपनो, गोविन्द दियो बताय।।
(अर्थ - कबीर दास जी कहते हैं कि शिक्षक और भगवान अगर साथ में खड़े हैं तो सबसे पहलो गुरु के चरण छूने चाहिए, क्योंकि ईश्वर तक पहुंचने का रास्ता भी गुरु ही दिखाते हैं।)

6. ऐसी वाणी बोलिए मन का आप खोए, औरन को शीतल करे, आपहुं शीतल होए
(अर्थ- कबीर दास जी कहते हैं व्यक्ति को हमेशा ऐसी बोली बोलनी चाहिए जो सामने वाले को अच्छा लगे और खुद को भी आनंद की अनुभूति हो।)

7. बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर। पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।।
(अर्थ- जिस प्रकार खजूर का पेड़ इतना ऊंचा होने के बावजूद आते-जाते राही को छाया नहीं दे सकता है और उसके फल तो इतने ऊपर लगते हैं कि आसानी से तोड़े भी नहीं जा सकते हैं। उसी प्रकार आप कितने भी बड़े आदमी क्यों न बन जाए लेकिन आपके अंदर विनम्रता नहीं है और किसी की मदद नहीं करते हैं तो आपका बड़ा होने का कोई अर्थ नहीं है।)

राजभाषा विभाग , गृह मंत्रालय द्वारा मध्य क्षेत्र के लिए क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन

मध्य, पश्चिम एवं उत्तरी क्षेत्रो का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन

राजभाषा सम्मेलन मध्य, पश्चिम व उत्तरी क्षेत्रो से राजभाषा अधिकारी

केंद्रीय गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग की ओर से क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन जयपुर के सीतापुरा स्थित जेईसीसी में 17 फरवरी को किया गया . यह सम्मलेन उत्तर-1, उत्तर-2, मध्य एवं पश्चिम क्षेत्रों के लिए संयुक्त रूप से आयोजित किया गया . जिसमें हिंदी को बढ़ावा देने के लिए चयनित विजेताओं को पुरस्कार भी दिया गया . राजभाषा विभाग की संयुक्त सचिव डॉ. मीनाक्षी जौली ने रविवार को आयोजित प्रेस वार्ता में बताया कि यह वर्ष 2024-25 का दूसरा आयोजन है. इससे पहले 04 जनवरी, 2025 को मैसूरु (कर्नाटक) में इस वर्ष का पहला क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया था.

समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान के मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा उपस्थित रहे . विशिष्ट अतिथि केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय, प्रदेश के उप मुख्यमंत्री दीया कुमारी भी उपस्थित रहे I इस सम्मेलन में राजभाषा विभाग की सचिव, 16 राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों से केंद्र सरकार के कार्यालयों, बैंकों व उपक्रमों के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे .
हिंदी के प्रयोग के आधार पर देश को 'क', 'ख' और 'ग' क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है, और इन क्षेत्रों में संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन एवं राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए, देशभर में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां और राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के अधीन 8 क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय कार्यरत हैं.

बदलते हुए समय की आवश्यकताओं के अनुसार हिंदी को तकनीकी दृष्टि से समृद्ध और व्यापक बनाने के लिए और देश की मातृभाषाओं के विस्तार व विकास के लिए राजभाषा विभाग ने कई नवाचार किए हैं. वर्ष 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर व्यापक स्तर पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित किए जाते हैं. विभाग की ओर से डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया गया है. राजभाषा विभाग सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रयासरत है. इसी क्रम में हर वित्तीय वर्ष में देश के अलग-अलग भागों में चार क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित किए जाते हैं.

महिला दिवस विशेष

महिला दिवस मानाने का मुख्य उद्देश्य है महिलाओं को आत्मनिर्भर होने के लिए प्रेरित करना। सशक्तिकरण यानि महिलाओं को उनकी पूरी क्षमता तक पहुचने का अवसर प्रदान होना ताकि वे समाज में सामान अधिकार और सम्मान प्राप्त कर सके। सशक्त नारी अपनी इच्छानुसार शिक्षा प्राप्त कर अपनी आय का स्त्रोत तय कर सकती है ताकि उसे अपनी मुलभुत आवश्यकताओं के लिए किसी पर निर्भर ना होना पड़े। मनुष्य में यह ताकत होती है कि वह अपनी कमजोरी पर ज्ञान व अपने आत्मविश्वास से ही विजय प्राप्त कर सकता है। यह तथ्य महिलाओं व पुरुषों दोनों पर ही लागु होती है। परन्तु आज भी महिलाओं को इसका आभास नहीं है। महिलाऐं दुनिया की आधी आबादी का हिस्सा है। उनका विकास सामाजिक कल्याण, आर्थिक समृद्धि और वैश्विक प्रगति के लिए आवश्यक है। सशक्त महिलाऐं परिवार के पोषण , सामाजिक विकास और आर्थिक पूर्ती को आगे **बढ़ाने** में सहायक होती है। समाज द्वारा लगाए गए अवरोध अक्सर नारी सशक्तिकरण में बाधा डालते है और वे घरेलु भूमिकाओं तक सीमित रह जाती है। परिणामस्वरूप उन्हें सामाजिक प्रतिबंधो का सामना करना पड़ता है। महिलाओं को यदि अवसर मिले तो वह हर क्षेत्र में अपनी योग्यता साबित कर सकती है। जब समाज अपनी रूढ़िवादिता को नकारेगा तभी नारी सशक्तिकरण को बढ़ावा मिल सकेगा। इसके लिए जरुरी है की समाज बाल विवाह, दहेज़ प्रथा जैसी कुरीतिओं को छोड़े व महिलाओं **के लिए** सामान शिक्षा एवं सामान अधिकारों के प्रति समर्पित हो। तभी वास्तव में नारी सशक्तिकरण प्रभावी होगा।

पम्मी शिंदे वासुरे
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर में 8 मार्च को महिला दिवस मनाया गया

बिमा लोकपाल

बीमा लोकपाल के कार्यालय बीमा लोकपाल परिषद (सीआईओ) के प्रशासनिक नियंत्रण में हैं, जिसे बीमा लोकपाल नियम, 2017 के तहत गठित किया गया है।

बीमा लोकपाल कार्यालय एक वैकल्पिक शिकायत निवारण मंच है जिसे बीमा कंपनियों और उनके एजेंटों और मध्यवर्तियों के विरुद्ध बीमा, समूह बीमा पॉलिसियों, एकमात्र स्वामित्व और सूक्ष्म उद्यमों को जारी की गई पॉलिसियों की पीड़ित पॉलिसीधारकों की शिकायतों को लागत प्रभावी और निष्पक्ष तरीके से हल करने के उद्देश्य से स्थापित किया गया है।

पूरे देश को कवर करने के लिए अहमदाबाद, बेंगलुरु, भोपाल, भुवनेश्वर, चंडीगढ़, चेन्नई, दिल्ली, गुवाहाटी, हैदराबाद, जयपुर, कोच्चि, कोलकाता, लखनऊ, मुंबई, नोएडा, पुणे और पटना में 17 लोकपाल केंद्र हैं।

बीमा लोकपालों की नियुक्ति बीमा लोकपाल परिषद द्वारा बीमा लोकपाल नियम, 2017 (समय-समय यथा संशोधित) के संदर्भ में की जाती है और उन्हें निम्नलिखित आधारों में से किसी एक पर बीमाकर्ता (इसके एजेंटों और मध्यवर्तियों सहित) या बीमा ब्रोकर के कार्यनिष्पादन में कमी का आरोप लगाने वाली शिकायतों को प्राप्त करने और उन पर विचार करने का अधिकार दिया जाता है:

- दावे के निपटान में विलंब.
- जीवन बीमाकर्ता, साधारण बीमाकर्ता या स्वास्थ्य बीमाकर्ता द्वारा दावों का आंशिक या पूर्ण रूप से स्वीकार न करना।
- बीमा पॉलिसी के संदर्भ में भुगतान किए गए या देय प्रीमियम पर विवाद।
- पॉलिसी दस्तावेज़ या पॉलिसी अनुबंध में किसी भी समय पॉलिसी की नियमों और शर्तों की गलत व्याख्या।
- जहां तक विवाद दावे से संबंधित है, बीमा पॉलिसियों की विधिक संरचना।
- बीमाकर्ताओं और उनके एजेंटों और मध्यवर्तियों के विरुद्ध पॉलिसी भुगतान से संबंधित शिकायतें।
- जीवन बीमा पॉलिसी, स्वास्थ्य बीमा पॉलिसी सहित साधारण बीमा पॉलिसी जारी करना जो प्रस्तावक द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव फॉर्म के अनुरूप न हो।
- स्वास्थ्य बीमा सहित जीवन बीमा और साधारण बीमा में प्रीमियम प्राप्त होने के बाद बीमा पॉलिसी जारी न करना।
- पॉलिसीधारकों के हितों या विनियमों, आईआरडीएआई द्वारा जारी अनुदेशों या दिशानिर्देशों या पॉलिसी संविदा के निबंधन और शर्तों के संरक्षण के संबंध में प्राधिकरण (आईआरडीएआई) द्वारा बनाए गए किसी विनियम के उपबंधों का पालन न करने या उनका पालन न करने से उत्पन्न कोई अन्य मामला, जहां तक ऐसा मामला उपर्युक्त खंडों में निर्दिष्ट मुद्दों से संबंधित हो।

वीरों का कैसा हो वसंत ?

वीरों का कैसा हो वसन्त ' कविता प्रसिद्ध कवियित्री *सुभद्रा कुमारी चौहान* द्वारा रचित हैं। वह स्वच्छंद कवियित्री थी । इसमें कवयित्री ने एक वीर सैनिक सारी सुख-सुविधा का त्यागकर देश की रक्षा के लिए हमेशा तैयार रहता है, उनका वसंत कैसा होगा वर्णन किया है।

वीरों का कैसा हो वसंत?
आ रही हिमाचल से पुकार,

है उदधि गरजता बार-बार,
प्राची, पश्चिम, भू, नभ अपार,

सब पूछ रहे हैं दिग्-दिगंत,
वीरों का कैसा हो वसंत?

फूली सरसों ने दिया रंग,
मधु लेकर आ पहुँचा अनंग,

वधु-वसुधा पुलकित अंग-अंग,
हैं वीर वेश में किंतु कंत,

वीरों का कैसा हो वसंत?
भर रही कोकिला इधर तान,

मारू बाजे पर उधर गान,
है रंग और रण का विधान,

मिलने आये हैं आदि-अंत,
वीरों का कैसा हो वसंत?

गलबाँहें हों, या हो कृपाण,
चल-चितवन हो, या धनुष-बाण,

हो रस-विलास या दलित-त्राण,
अब यही समस्या है दुरंत,

वीरों का कैसा हो वसंत?
कह दे अतीत अब मौन त्याग,

लंके, तुझमें क्यों लगी आग?
ऐ कुरुक्षेत्र! अब जाग, जाग,

बतला अपने अनुभव अनंत,
वीरों का कैसा हो वसंत?

हल्दी-घाटी के शिला-खंड,
ऐ दुर्ग! सिंह-गढ़ के प्रचंड,

राणा-ताना का कर घमंड,
दो जगा आज स्मृतियाँ ज्वलंत,

वीरों का कैसा हो वसंत?
भूषण अथवा कवि चंद नहीं,

बिजली भर दे वह छंद नहीं,
है क़लम बँधी, स्वच्छंद नहीं,

फिर हमें बतावे कौन? हंत!
वीरों का कैसा हो वसंत?

बीमा-ए.एस.बी.ए. (ब्लॉक की गई राशि द्वारा समर्थित आवेदन)

बीमा-एएसबीए (BIMA-ASBA), जिसका अर्थ है "ब्लॉक की गई राशि द्वारा समर्थित बीमा आवेदन", IRDAI द्वारा शुरू की गई एक नई प्रणाली है जो बीमा प्रीमियम के भुगतान को आसान बनाती है, जहाँ पॉलिसीधारक अपने बैंक खाते में धनराशि को ब्लॉक कर सकते हैं, और भुगतान केवल पॉलिसी के स्वीकृत होने पर ही किया जाता है.

बीमा-एएसबीए के बारे में विस्तार से:

क्या है बीमा-एएसबीए?

यह एक यूपीआई (UPI) आधारित प्रणाली है जो बीमा कंपनियों को पॉलिसीधारक के बैंक खाते में प्रीमियम राशि को ब्लॉक करने की अनुमति देती है, ताकि पॉलिसी के स्वीकृत होने पर ही भुगतान किया जा सके.

कैसे काम करता है?

- पॉलिसीधारक अपने बैंक खाते में प्रीमियम राशि को ब्लॉक करने के लिए बीमा कंपनी को अनुमति देता है.
- जब तक पॉलिसी स्वीकृत नहीं होती, तब तक राशि ब्लॉक रहती है.
- पॉलिसी के स्वीकृत होने पर, ब्लॉक की गई राशि स्वचालित रूप से बीमा कंपनी को हस्तांतरित हो जाती है.

क्यों ज़रूरी है?

- यह पॉलिसीधारकों को तत्काल भुगतान करने की आवश्यकता से बचाता है.
- यह पॉलिसी के स्वीकृत होने से पहले ही पैसे के नुकसान का जोखिम कम करता है.
- यह प्रीमियम भुगतान प्रक्रिया को आसान और सुव्यवस्थित बनाता है.

बीमा-एएसबीए के लाभ:

- पॉलिसीधारकों के लिए आसान और सुविधाजनक प्रीमियम भुगतान.
- पैसे के नुकसान का जोखिम कम होता है.
-
- अनाधिकृत कटौतियों से बचाव.

ध्यान देने योग्य बातें:

- बीमा-एएसबीए सुविधा केवल जीवन और स्वास्थ्य बीमा पॉलिसियों के लिए उपलब्ध है.
- बीमा कंपनियां प्रस्ताव फॉर्म में एक विकल्प उपलब्ध कराएंगी, जिसमें संभावित पॉलिसीधारक बीमाकर्ता को यूपीआई के माध्यम से उनके बैंक खाते में राशि अवरुद्ध करने की अनुमति दे सकेंगे.
- यदि पॉलिसी स्वीकृत नहीं होती है, तो ब्लॉक की गई राशि स्वचालित रूप से पॉलिसीधारक के खाते में वापस कर दी जाएगी.

व्यावसायिक कार्यालय – इटारसी को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा उत्कृष्ट कार्यन्वयन हेतु तृतीय पुरस्कार प्राप्त

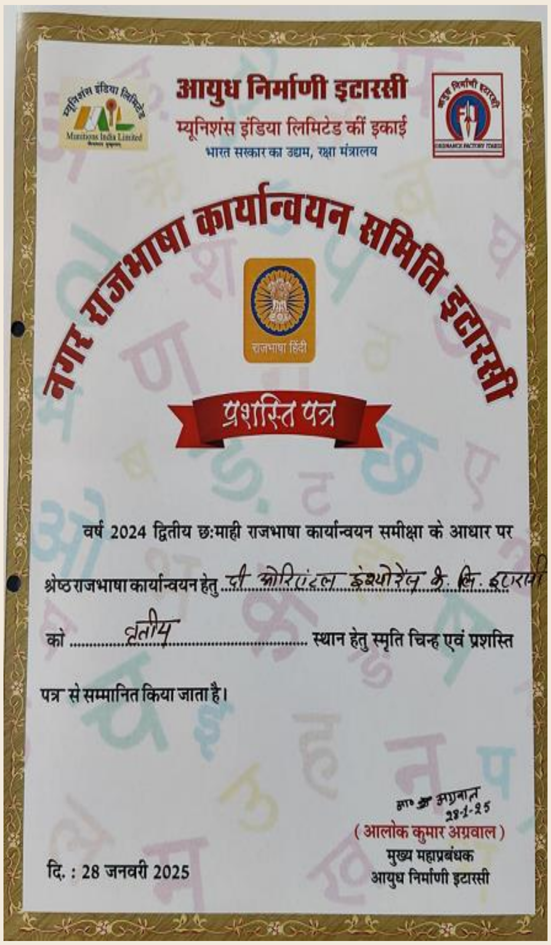
आयुध निर्माणी इटारसी
म्यूनिशंस इंडिया लिमिटेड कीं इकाई
भारत सरकार का उद्यम, रक्षा मंत्रालय

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति इटारसी

प्रशस्ति पत्र

वर्ष 2024 द्वितीय छ:माही राजभाषा कार्यान्वयन समीक्षा के आधार पर श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन हेतु दी ओरिएंटल इंश्योरेंस कं. लि. इटारसी को तृतीय स्थान हेतु स्मृति चिन्ह एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया जाता है।

(आलोक कुमार अग्रवाल)
मुख्य महाप्रबंधक
आयुध निर्माणी इटारसी

दि. : 28 जनवरी 2025

वो शब्द सुनने दो

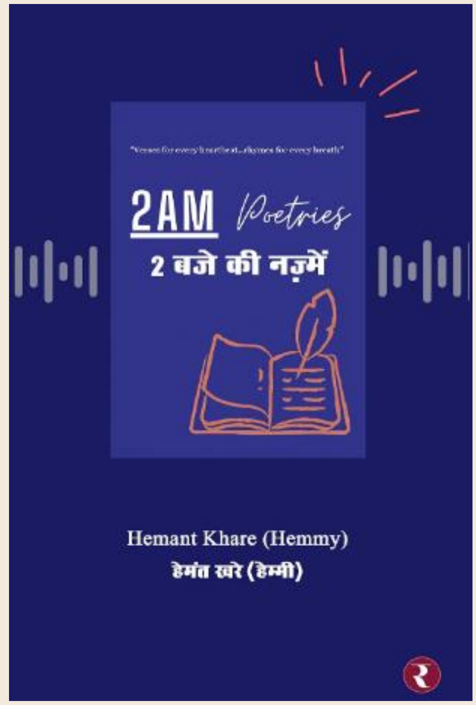

भाव जो उर में बसे मुझे वो स्वप्न बुनने दो .....
जो गढ़े नहीं गए मुझे वो शब्द सुनने दो ....!

जो जगत से मिल सका उसको सहेजकर ...
जीनी है कई जिंदगियां उम्र है पल भर ..!
जो समेटता हूँ कही .. जाए न बिखर ..
है सता रहा कहीं अंतर में है यही डर ...!
प्राप्त क्या प्रारब्ध क्या ये तथ्य गुनने दो ...
जो गढ़े नहीं गए मुझे वो शब्द सुनने दो .....!

कल्पनाओं के भंवर में क्यों उलझता मन....
जो रहा चेतन मन क्यों है भला वो अवचेतन .....!
नष्ट होकर भी जो करे नित नए सृजन ....
क्या यही अमरत्व है चाहे जिसे जन-जन ....!
लुप्त न हो जो कभी वो चिन्ह चुनने दो ....
जो गढ़े नहीं गए मुझे वो शब्द सुनने दो ....!

साथियों ,

मै यह साझा करते हुए अत्यधिक उत्साहित हूँ कि मेरी कविता संग्रह को शीर्ष हिंदी प्रकाशक राजमंगल प्रकाशन द्वारा चयनित किया गया है और अब यह एक पुस्तक के रूप में ऑनलाइन व ऑफलाइन उपलब्ध है . आप यहाँ से पुस्तक ऑनलाइन खरीद सकते है –

https://www.amazone.in/dp/9348578545

https://www.flipkart.com/2-am-poetries/p/itm064e02bf8858?pid=9789348578549

हेमंत खरे
सहायक प्रबन्धक, दावा केंद्र, ग्वालियर

अनंत प्रश्नों का संसार

धरती जो है टिकी, क्यो नहीं गिरती
क्या है, वो शक्ति , जो सबको संभालती ?

अनार के भीतर लाल मोती किसने सजाएँ,
क्या बादल से नारियल है बारिश बरसाए ?

संतरे के गूदे को किसने संवारा ,
फलो की मिठास मे रस भरा ?

ऋतुओं का खेल कौन जानता ,
आंसमान मे इंद्रधनुष कौन सजाता ?

चाँद को पृथ्वी के चारों ओर कौन खींचता ,
गुलाब- गुलाबी, लाल- गुड़हल क्यो होता ?

ये प्रश्न मेरे मन को क्यों आए,
हम इन्हे जानकार क्या पाए?

उत्तर तुम्हारे लिए है, है मुझसे दूर,
मेरे लिए यह अनंत शक्ति , जो हर जगह है भरपूर ।

शोभा एग्रेश्वरन
सहायक प्रबन्धक
क्षे॰ का॰ इंदौर

क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर की विविध गतिविधियाँ

क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय भोपाल द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर का निरिक्षण

क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय भोपाल द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर का निरिक्षण

संविधान दिवस पर संविधान उद्देशिका का वाचन

संविधान दिवस पर संविधान उद्देशिका का वाचन

अम्बेडकर जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित

अम्बेडकर जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित

क्षेत्रीय कार्यालय सहित अधीनस्थ कार्यालयों की विविध गतिविधियां

अंबेडकर जयंती का आयोजन एवं क्षेत्रीय कार्यालय नवीन परिसर का उद्घाटन समारोह